AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

2047 तक भारत का रूपांतरणः चार स्तंभों पर आधारित विकास की रणनीति

ORIGINAL ARTICLE

Author
असीमकुमार विनुभाई पटेल
प्रभारी प्रधानाचार्य
साबर समाज सेवा महाविद्यालय
सोनासण, जिला साबरकांठा, गुजरात, भारत

शोध सार

इस शोध पत्र में 2047 तक भारत को एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने की रणनीतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन चार प्रमुख स्तंभों आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति पर केंद्रित है, जो भारत के समग्र विकास की नींव रखेंगे। शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया गया है, जिसमें सरकारी रिपोर्ट, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आंकड़े, नीति दस्तावेज, और विशेषज्ञों की सिफारिशों का गहन अध्ययन शामिल है। शोध निष्कर्षों के अनुसार, भारत को औद्योगीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था, सतत् कृषि, हरित ऊर्जा, नवाचार, और शिक्षा सुधार जैसे क्षेत्रों में ठोस कदम उठाने होंगे साथ ही, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य सुविधाओं, और समावेशी विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि भारत इन सभी क्षेत्रों में संतुलित विकास सुनिश्चित करता है, तो 2047 तक वैश्विक मंच पर नेतृत्व स्थापित कर सकता है और "विश्वगुरु" बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

मुख्य शब्द

आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता, तकनीकी नवाचार.

परिचय

भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, जो हमारे इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होगा। यह न केवल हमारे स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाएगा, बल्कि यह भी तय करेगा कि हम भविष्य में किस दिशा में बढ़ेंगे। भारत ने बीते दशकों में जबरदस्त प्रगति की है, लेकिन यदि हमें 2047 तक "विश्वगुरु" बनना है तो हमें एक सुव्यवस्थित और ठोस विकास योजना पर कार्य करना होगा। "विकसित भारत 2047" की अवधारणा को साकार करने के लिए चार प्रमुख स्तंभों आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति पर विशेष ध्यान देना होगा। इन स्तंभों के संतुलित विकास से ही भारत वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने के योग्य बन पाएगा और विश्वगुरु बनने का सपना पूरा हो सकेगा। 2047 तक भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए इन चार स्तंभों का संतुलित और समग्र विकास आवश्यक है। आर्थिक विकास से समृद्धि आएगी, सामाजिक प्रगति से एक सशक्त समाज का निर्माण होगा, पर्यावरणीय स्थिरता से दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित होगा, और तकनीकी उन्नति से भारत को वैश्विक मंच पर नेतृत्व प्राप्त होगा। यदि हम इन सभी क्षेत्रों में निरंतर प्रयास करें और एक ठोस रणनीति पर कार्य करें, तो 2047 तक भारत न केवल एक विकसित राष्ट्र बनेगा, बल्कि विश्वगुरु की प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेगा।

अनुसंधान पद्धति और प्रक्रिया

इस शोध पत्र में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया हैए ताकि 2047 तक भारत के विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया जा सके। शोध में प्राथमिक (Primary) और द्वितीयक (Secondary) डेटा स्रोतों का संयोजन किया गया है जिससे निष्कर्षों की प्रमाणिकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित हो सके।

प्राथमिक स्त्रोत के तहत विभिन्न सरकारी नीतियों, योजनाओं और विशेषज्ञों के विचारों का विश्लेषण किया गया है। नीति आयोग, रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI), वर्ल्ड बैंक और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) जैसी संस्थाओं द्वारा जारी रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के विचारों को शामिल किया गया है।

द्वितीयक स्त्रोत में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति से संबंधित शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, अखबारों, पत्रिकाओं और ऑनलाइन संसाधनों से डेटा संकलित किया गया है। विभिन्न योजनाओं जैसे मेक इन इंडिया, आयुष्मान भारत, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

शोध पद्धति में वर्णनात्मक और तुलनात्मक विश्लेषण को अपनाया गया है, जिससे भारत की वर्तमान स्थिति का आकलन किया जा सके और 2047 तक की संभावनाओं पर निष्कर्ष निकाला जा सके। डेटा का संकलन और विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय और नीति–आधारित तरीकों से किया गया है, जिससे निष्कर्षों की सटीकता बढ़ाई जा सके।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और तकनीकी पहलुओं का गहराई से अध्ययन कर उन कारकों को उजागर करना है, जो भारत के ''विकसित राष्ट्र'' बनने की राह में सहायक होंगे।

इस शोध पत्र में भारत के विकास और 2047 तक उसे एक विकसित राष्ट्र तथा विश्वगुरु बनाने के लिए आवश्यक चार महत्वपूर्ण आधारों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। ये चार आधार आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति भारत के समग्र विकास के मूलभूत स्तंभ हैं। इन विषयों की गहन समीक्षा विभिन्न सरकारी और गैर.सरकारी संगठनों द्वारा प्रकाशित रिपोर्टोंए शोधपत्रोंए नीति दस्तावेजों और विशेषज्ञ समितियों की सिफारिशों के अध्ययन के आधार पर की गई है।

विषय–आधारित चर्चा

इन विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों और निष्कर्षों के आधार पर इस शोध पत्र में चारों आधारों की व्यापक चर्चा की गई है ताकि भारत के 2047 तक के विकास के लिए ठोस रणनीतियों और आवश्यक नीतियों को रेखांकित किया जा सके।

1. **आर्थिक विकासः** भारत को 2047 तक एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाने के लिए मजबूत आर्थिक नीतियों और संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता होगी। इसके लिए औद्योगिक विकास, कृषि सुधार, व्यापार एवं निवेश के विस्तार, और अवसंरचना के उन्नयन पर विशेष ध्यान देना होगा। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार, भारत वर्तमान में दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और यदि आर्थिक सुधारों को गति दी जाए तो 2047 तक यह वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बन सकता है। औद्योगीकरण किसी भी राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि का मूल आधार होता है। भारत को मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं को और सशक्त बनाकर वैश्विक उत्पादन केंद्र के रूप में स्थापित करना होगा। भारत का विनिर्माण क्षेत्र अभी भी सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 16.17 प्रतिशत का योगदान देता है (स्रोतः भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2023।

   भारत की लगभग 58 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, लेकिन कृषि क्षेत्र का जीडीपी में योगदान केवल 18 प्रतिशत है (स्रोतः कृषि मंत्रालय, भारत सरकार 2023)। इसे सुधारने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों, जैविक खेती और स्मार्ट कृषि प्रणालियों को अपनाना आवश्यक होगा। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-

KISAN) जैसी योजनाओं के प्रभाव को बढ़ाकर किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है।

भारत को एक निवेश–अनुकूल वातावरण बनाना होगा जिससे विदेशी निवेशकों का आकर्षण बढ़े। स्टार्टअप इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी योजनाएँ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम तेजी से विकसित हो रहा है, और 2023 में भारत 100 से अधिक यूनिकॉर्न स्टार्टअप्स के साथ दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब बन गया (स्रोतः DPIIT, भारत सरकार)।

भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और डिजिटल अवसंरचना में निवेश अत्यंत आवश्यक है। भारत सरकार ने 2021 में ''गति शक्ति योजना'' के तहत 100 लाख करोड़ का बुनियादी ढांचा विकास कार्यक्रम शुरू किया जिसका उद्देश्य परिवहन और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को बेहतर बनाना है। राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई 2014 में 91,287 किमी थी, जो 2023 तक बढ़कर 1,44,634 किमी हो गई (स्रोतः सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार)।

2. **सामाजिक प्रगतिः** देश का समग्र विकास तभी संभव है जब समाज के सभी वर्गों को समान अवसर, संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। सामाजिक प्रगति के चार प्रमुख घटक हैं शिक्षा और कौशल विकास, स्वास्थ्य सेवाएँ, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण तथा गरीबी उन्मूलन और समावेशी विकास। भारत को 2047 तक एक विकसित और समावेशी समाज बनाने के लिए इन चारों क्षेत्रों में ठोस नीतियों और कार्यक्रमों का प्रभावी कार्यान्वयन करना होगा। भारत में अभी भी साक्षरता दर 77.7 प्रतिशत (स्रोतः राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 2022) है, जो विकसित देशों की तुलना में कम है। इसे बढ़ाने के लिए डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट क्लासरूम, और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार किया जाना आवश्यक है। ''प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना'' (PMKVY) के तहत अब तक 1.37 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है (स्रोतः कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालयए 2023), लेकिन इसे और अधिक व्यापक स्तर पर लागू करने की जरूरत है।

स्वस्थ समाज ही किसी राष्ट्र के विकास का आधार होता है। भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, भारत में प्रति 10,000 नागरिकों पर केवल 8.6 डॉक्टर उपलब्ध हैं, जबकि विश्व औसत 15 डॉक्टर प्रति 10,000 नागरिक है। इसे सुधारने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHC) की संख्या बढ़ानी होगी और टेलीमेडिसिन सेवाओं का विस्तार करना होगाए जिससे दूर–दराज के क्षेत्रों में भी बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

भारत में महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और रोजगार के अवसर देना सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए अनिवार्य है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट (2023) के अनुसार, भारत में महिला श्रम भागीदारी दर केवल 25 प्रतिशत है, जबकि वैश्विक औसत 47 प्रतिशत है। इसे बढ़ाने के लिए महिला सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं, जैसे ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'', ''स्टैंड अप इंडिया'', और ''महिला ई–हाट'' को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता है।

गरीबी उन्मूलन के बिना समाज का समावेशी विकास संभव नहीं है। भारत में 2021–22 के आंकड़ों के अनुसार राष्ट्रीय गरीबी दर 10.2 प्रतिशत थी (स्रोतः नीति आयोग)। हालाँकि पिछले एक दशक में गरीबी में कमी आई है, लेकिन अभी भी लाखों लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसके समाधान के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को प्रभावी बनाना होगा, जैसे कि ''मनरेगा'', ''राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना'' और ''प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना''।

3. **पर्यावरणीय स्थिरताः** 2047 तक भारत को एक हरित और सतत् विकासशील राष्ट्र के रूप में स्थापित करना आवश्यक होगा, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सके। पर्यावरणीय स्थिरता के चार प्रमुख घटक हैं नवीकरणीय ऊर्जा का विकास, जल संरक्षण, प्रदूषण

नियंत्रण, और हरित आवास व स्मार्ट सिटी का निर्माण। भारत सरकार ने 2070 तक नेट–जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है, जिसे प्राप्त करने के लिए इन चारों क्षेत्रों में ठोस प्रयास आवश्यक होंगे (स्रोतः संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलनए COP26, 2021)। जल संकट भारत के सतत विकास के लिए एक बड़ी चुनौती है। नीति आयोग की रिपोर्ट (2018) के अनुसार, भारत की 40 प्रतिशत आबादी 2030 तक गंभीर जल संकट का सामना कर सकती है। इस समस्या से निपटने के लिए जल संरक्षण और पुर्नचक्रण तकनीकों को अपनाना आवश्यक होगा। भारत में वायु, जल और भूमि प्रदूषण की समस्या विकराल होती जा रही है। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2022 के अनुसारए दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में से 39 भारत में स्थित हैं।

4. **तकनीकी उन्नति और नवाचारः** तकनीकी प्रगति और नवाचार भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक होंगे। 2047 तक भारत को एक वैश्विक नवाचार केंद्र और उच्च तकनीकी अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति करनी होगी। वर्तमान में, भारत नवाचार सूचकांक (Global Innovation Index, 2023) में 40वें स्थान पर है, लेकिन इसे और ऊपर ले जाने के लिए मजबूत नीतियाँ और अनुसंधान को बढ़ावा देना आवश्यक होगा। तकनीकी विकास के चार प्रमुख क्षेत्र हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वचालन, साइबर सुरक्षा और डिजिटल साक्षरता, अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी, और बायोटेक्नोलॉजी व स्वास्थ्य विज्ञान।

   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वचालन तकनीक भारत की औद्योगिक, सेवा और कृषि क्षेत्र को अगले स्तर तक ले जा सकती हैं। McKinsey की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, AI और ऑटोमेशन से 2030 तक भारत की GDP में 500 अरब डॉलर तक की वृद्धि हो सकती है। डिजिटल इंडिया पहल के तहत भारत में डिजिटल सेवाओं का तेजी से विस्तार हुआ है। वर्तमान में भारत में 82 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं (स्रोतः ट्राई, 2023), लेकिन साइबर सुरक्षा की दृष्टि से देश को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत का अंतरिक्ष और रक्षा क्षेत्र तेजी से प्रगति कर रहा है। इसरो (ISRO) के नेतृत्व में ''चंद्रयान–3'', ''गगनयान'' और ''आदित्य–एल1'' जैसे मिशन भारत को एक वैश्विक अंतरिक्ष महाशक्ति बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। 2047 तक भारत को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बनने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए अनुसंधान और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना होगा।

2047 तक भारत के विकास में योगदान हेतु समाज के लिए सुझाव

आर्थिक विकास को गति देने के लिए नागरिकों को स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना चाहिए। ''वोकल फॉर लोकल'' के सिद्धांत पर चलते हुए भारतीय वस्त्र, हस्तशिल्प और घरेलू उद्योगों से निर्मित उत्पादों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए इसके अलावा, युवाओं को उद्यमशीलता और नवाचार की ओर बढ़ावा देना आवश्यक है।

सामाजिक प्रगति के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक नागरिक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके आसपास कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। शिक्षकों, अभिभावकों और समाज को मिलकर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारनी होगी। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समाज को लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए समाज को जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। जल संरक्षण एक प्रमुख विषय है, और प्रत्येक नागरिक को वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण और जल के अनावश्यक उपयोग को रोकने में योगदान देना चाहिए। वनों की कटाई रोकने और अधिक वृक्षारोपण करने से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखा जा सकता है।

तकनीकी प्रगति में समाज की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि समाज के सभी वर्ग डिजिटल तकनीकों का उपयोग कर सकें और डिजिटल इंडिया के लक्ष्य को सफल बना सकें।

निष्कर्ष

भारत को 2047 तक एक विकसित, आत्मनिर्भर और वैश्विक नेतृत्व वाला राष्ट्र बनाने के लिए आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति जैसे चार प्रमुख स्तंभों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में सतत सुधार और नवाचार के माध्यम से ही हम एक समृद्ध और समावेशी भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं। मजबूत आर्थिक नीतियाँ, उद्यमशीलता को प्रोत्साहन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ, पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी नवाचार मिलकर भारत को विश्व मंच पर एक नई पहचान दिलाने में सक्षम होंगे।

संदर्भ सूची

1. Basu, K. (2018) Economic growth in India: Challenges and opportunities, *Journal of Economic Perspectives,* 32(2), 3-22.
2. Bhagwati, J. & Panagariya, A. (2013) *Why Growth Matters: How Economic Growth in India Reduced Poverty and the Lessons for Other Developing Countries,* PublicAffairs, New York.
3. Chatterjee, P. (2021) Digital transformation and India's economic future. *Technology & Society,* 67, 102-115.
4. Dreze, J. & Sen, A. (2013) *An Uncertain Glory: India and Its Contradictions,* Princeton University Press, New Jersey, USA.
5. Ghosh, S. (2020) Renewable energy transition in India: Policy challenges and solutions, *Energy Policy,* 142, 111-126.
6. Gupta, D. (2020) *The Indian Economy: A Macroeconomic Perspective,* Oxford University Press, New Delhi.
7. Khosla, R. (2021) *India 2047: Challenges and Opportunities in Sustainable Development,* Springer, New Delhi.
8. NITI Aayog (2021) *Strategy for New India @ 75.* Government of India.
9. Sen, A. (1999) *Development as Freedom.* Oxford University Press, New Delhi.
10. United Nations Development Programme (2021) *Human Development Report India.* UNDP.
11. United Nations (2021) *Sustainable Development Goals Report.* UN Publications, New Delhi.

——==00==——